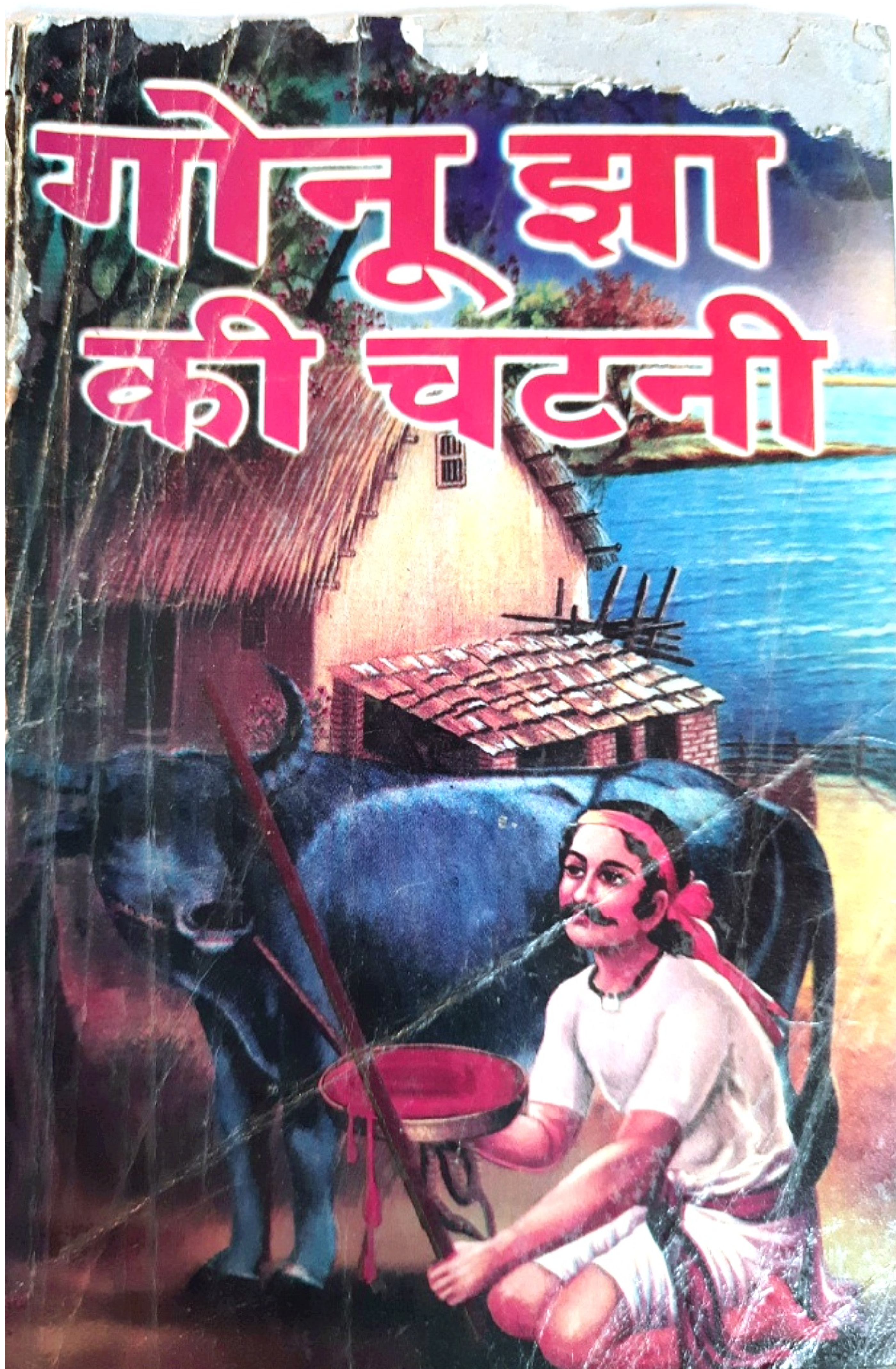

गोनू झा
की चटनी

गोनू झा की चटनी

मैथिल ब्राह्मण गोनू झा के चुटकुलों का अनमोल संकलन

प्रस्तुति :-
संतोष कुमार झा
पटना

प्रकाशक
ज्ञान गंगा एण्ड को० पब्लिशर्स
9/1752, गली नं.6, कैलाश नगर,
दिल्ली-31
फोन नं.-22074727
मूल्य-15.00 रु०

अनुक्रमणिका

उपसंहार

गोनू झा की चटनी

एक दिन संध्याकाल में निर्मला और सुधा दोनों सखी बैठ कर पर वार्तालाप कर रही थी ।

निर्मला – सखी, आज कोई मनोरंजन कहानी सुनाऊं ।

निर्मला – सखी, तुम हमारे बराबर गोनू झा की कहानी नहीं सकोगी । अगर परीक्षा लेना चाहती हो तो मुझसे बाजी लगाओ ।

सुधा – सखी, तुम व्यर्थ ढकोसला दिखा रही हो । मैं सत्य कहती कि तुम मुझसे हार जाओगी ।

निर्मला – अच्छा, तो कहना शुरू करो । इतने में निर्मला की बह सरला भी आ पहुँची । दोनों सखी के वार्तालाप को सुनकर सरला हंसी

सरला बोली – दीदी, तुम दोनों आपस में बाजी लगाओ । मैं कम-से-क कहानी भी तो सुनूंगी ।

यूं कहकर सभी ठठाकर हंसने लगी । फिर निर्मला बोली – अच्छा सखी, पहले मैं कहना शुरू करती हूँ ।

सुधा – अच्छा कहो !

1. बैल का घी

गोनू झा राजा शिव सिंह के दरबार के दरबारी थे । आमोद-प्रमोद तथा किसी प्रकार के कठिन प्रश्न का उत्तर देने के लिए गोनू झा कभी भी नहीं चुकते थे । एक दिन राजा शिव सिंह सभी दरवारियों के साथ अपने दरबार में बैठे हुए थे । उसी समय राजा ने गोनू झा से कहा कि मुझे बैल का घी ला दीजिए । अगर नहीं लायेंगे तो मैं आपको फांसी पर चढ़वा दूंगा ।

दरबार समाप्त होते ही गोनू झा तीन दिन का समय लेकर अपने घर चले गए और अन्न-पानी त्याग कर अपने पलंग पर सो गए । जब भोजन करने के लिए उनकी पुत्री उन्हें बुलाने आई तो गोनू झा उदास होकर अपने पुत्री से कहने लगे –

बेटी, आज मैं अन्न-पानी कुछ नहीं खाऊँगा । आज राजा ने मुझसे बैल का घी मांगा है, अगर मैं उसे घी नहीं दूंगा तो वह मुझे फाँसी पर चढ़ा देगा ।

मुझे अन्न-पानी कुछ नहीं सुहाता है। गोनू झा की पुत्री भी गोनू झा से कम चतुर नहीं थी। वह हंसकर बोली – पिताजी आप इसके लिए कुछ भी चिन्ता न करें। मैं सहर्ष तीसरे दिन उन्हें घी पहुँचा दूंगी।

यह सुनकर गोनू झा बहुत खुशी हुए और भोजन कर दरबार में आए। उसी दिन मध्य रात्रि में गोनू झा की पुत्री एक बकरी के बच्चे को काट कर उसके खून में एक धोती रंग कर राज-दरबार के पास वाले पोखर पर गई।

वहां पर झुठ-मुठ का रोने का बहाना कर चिल्लाती हुई धोती फींचने लगी। मध्य रात्रि में यह रोने का शब्द राजा के कान में पड़ा। राजा झट एक सिपाही के द्वारा गोनू झा की पुत्री को अपने सामने बुला कर पुछने लगे।

राजा – तुम, इस मध्य रात में पोखरे पर क्यों रो रही थी ?

गोनू झा की पुत्री – धर्मावतार, आज दस बजे रात में हमारे पिताजी को प्रसव हुआ है। बच्चा पेट से मरा ही निकला। उसी बच्चे के वियोग में मैं यह वस्त्र साफ करने के लिए पोखरे पर रोती हुई आयी थी।

राजा – क्या तुम पगली तो नहीं हो गई हो ? संसार में पुरुष को भी कहीं प्रसव होता है।

गोनू झा की पुत्री – दयानिधे, अगर पुरुष का प्रसन होना संसार में असंभव है तो बैल के घी के लिए हमारे पिताजी को क्या आज्ञा दी गई है। बैल भी तो पुलिंग ही है। यह सुनकर राजा खुश होकर पुरस्कार देते हुए गोनू झा की पुत्री को विदा किया।

यह कथा सुनकर सुधा बोली – अच्छा सखी, अब मैं दूसरी कहानी कहती हूँ।

2. पानी क्यों सड़ा

एक दिन राजा शिव सिंह सभासदों से बोले कि तीन प्रश्नों का मुझे एक ही उत्तर दीजिए। प्रश्न निम्नलिखित रूप में हैं।

(1) पान क्यों सड़ा ? (2) घोड़ा क्यों अड़ा ? (3) मुंछ क्यों कड़ा ? सभासदों में से कोई भी इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सके। परन्तु गोनू

झा ने इस प्रश्न का उत्तर बहुत सरलता से दिया। जवाब यों था फेरा गया। सभी सभासद गोनू झा से बोले कि इसका जवाब हम सबको पूरी तरह समझा दीजिए।

गोनू झा हंसते हुए बोले – (1) अगर पान में नित्य पानी नहीं फेरा जाय तो पान सड़ जायेगा। (2) अगर घोड़ा को सवार नित्य नहीं फेरा तो घोड़ा जरूर अड़ेगा। (3) अगर मूंछ पर नित्य हाथ न फेरा जाय तो वह अवश्य कड़ा होगा।

यह सुनकर खुश होकर राजा ने गोनू झा को काफी पारितोषिक दिया।

निर्मला बोली – सखी, अब मैं कहानी कहती हूँ, ध्यान लगाकर सुनो।

3. गोनू झा और खखनुआ हजाम

एक दिन गोनू झा परदेश से कई दिनों के बाद आ रहे थे। वह रास्ते में एक रोहू मछली खरीद कर अपने घर ला रहे थे। जब वह अपने गाँव के करीब पहुंचे तो उन्हें अपने गांव का खखनुआ हजाम मिला। खखनुआ गोनू झा को देखकर अपने मन में सोचने लगा कि आज गोनू झा को ठग कर किसी तरह से मछली लेना चाहिए।

गोनू झा खखनुआ से पूछने लगा – हमारे घर में सब कुशल है ? खखनुआ उदास भाव से जवाब दिया – हां, कुशल ही हैं। खखनुआ के उदासी भरे जवाब से उत्सुकतापूर्वक गोनू झा फिर बोले – अरे, साफ-साफ बताओं क्या बात हं, उदास होकर क्यों बोल रहे हो ? शीघ्र बताओ क्या बात हैं ?

खखनुआ – सरकार, आपके पिताजी परसों ही संसार से चल बसे।

गोनू झा उदास होकर बोले – क्या पिताजी का अन्तिम दर्शन मेरे भाग्य में नहीं बना था। अच्छा लो यह मछली तुम्हीं ले जाओ। मुझे तो इस मछली से अब कुछ काम नहीं।

खखनुआ मन ही मन खुशी से मछली लेकर चल दिया। इधर गोनू झा जब अपने घर पहुँचा तो अपने पिताजी को दरवाजे पर बैठा देखकर मन ही मन कहने लगे – अगर मैं असली गोनू झा होऊँगा तो उस मछली का बदला अवश्य चुका लूंगा।

उसी रात से गोनू झा कई दिनों तक दिन-रात अपने चुतड़ में गुरा के बहाने खटिया पर ही पड़े रहे। तब एक दिन वह अपने छोटे भाई भोनू झा से बोले – खखनुआ हजाम को बुला कर ले आओ। बहुत होशियार हजाम है। मालुम होता है गुरा पक गया है। मैं बहुत कष्ट में हूँ। शीघ्र चिरवा डालूँगा।

तुरन्त ही भोनू झा खखनुआ से जाकर सब हाल कह सुनाया। खखनुआ भी यह सोचकर कि बीमार अवस्था में गोनू झा सब बात भूल गए होंगे तुरन्त ही चल पड़ा। वह आकर देखा तो गोनू झा पलंग पर पड़े है।

गोनू झा खखनुआ को देखकर आर्त स्वर में बोले – मैं बहुत तकलीफ में हूँ। खटिया के नीचे जाकर हमारे चुतड़ के सामने खटिये की डोरा काट दो और गुरा को सावधानी से चीड़कर मेरा कष्ट निवारण करो।

इस पर झटपट खखनुआ खटिया के नीचे जाकर डोरी काट कर घाव देखने लगा। झट गोनू झा ने उसके मुंह पर पैखाना करते हुए बोले – लो खखनुआ, यह मछली ठग कर खाने का बदला है। अरे, क्या तुम नहीं जानते कि मेरा नाम गोनू झा है।

'गोनू झा ठगे दिल्ली - गोनू झा को ठगे घर की बिल्ली'। बेचारा खखनुआ लज्जित होकर पोखर में जाकर अपना शरीर धोया और पश्चाताप करते हुए घर लौट गया। गोनू झा भी पलंग से उठकर अपने काम-काज पूर्ववत् करने लगे।

सुधा हँसती हुई बोली – सखी, अब मैं चौथी कहानी कहती हूँ।

4. गोनू झा का बांस

एक साल राजा शिव सिंह के राज्य में रौदी होने के कारण जनता व्याकुल हो रही थी।

वर्षा के बिना खेत-गृहस्थी के लिए लोग त्राहि-त्राहि कर रहे थे। अचानक एक दिन एक ठग ब्राह्मण पण्डित का वेश धारण कर राजा के दरबार में पहुँचा और बोला कि मैं हवन यज्ञ द्वारा जिस गांव में चाहूं, जल वर्षा सकता हूँ।

यह समाचार झट-पट सम्पूर्ण गांव में फैल गया । राजा भी उनका पूर्ण सत्कार करते हुए रात में ठहरने का प्रबन्ध किया । प्रातःकाल पण्डित बेचारा भी स्नान क्रिया आदि से निवृत होकर सिर में चन्दन का बीस ठोप लगा कर राजा तथा ग्रामीण जनता के साथ यज्ञ स्थान चुनने के लिए चले ।

जिस दिन ठग पण्डित राजा के दरबार में आये उसी दिन संध्या काल में गोनू झा भी कई दिनों पर दूसरे गांव से घर आयें । उन्हें अपने परिवार वर्ग से ज्ञात हुआ कि एक पण्डित राजा के दरबार में जल वर्षाने आये हैं ।

प्रातःकाल गोनू झा भी स्नान क्रिया आदि से निवृत्त होकर सिर में चन्दन का एक सौ ठोप लगा कर दरबार के तरफ चले । रास्ते में उन्हें ठग पण्डित से मुलाकात हो गई । दोनों में परस्पर बातें होने लगी ।

गोनू झा पूछने लगे कि आपका नाम क्या है ? तथा आप में कौन-सा गुण है ? पण्डित ने कहा कि मेरा नाम 'बीस ठोप झा' है, मैं जिस गांव में चाहता हूँ, पानी वर्षा देता हूं ।

पण्डित बेचारे भी गोनू झा से पूछने लगे कि आपका शुभ नाम क्या है तथा आप में कौन सा गुण है ।

गोनू झा हंसते हुए बोले कि मेरा नाम सहस्र ठोप झा है । मैं परम मूर्ख ब्राह्मण हूं । हममें कुछ भी गुण नहीं है । हमारे पिताजी अपने मरण काल के समय में मुझे एक बांस दे गए थे और कह गए थे कि जिस खेत में वर्षा न हो उस खेत में जाकर मेघ को खोचाड़ा देना । उस खण्ड में वर्षा हो जायेगा ।

पण्डित जी बोले कि उतना बड़ा बांस आप रखते कहां है ? गोनू झा हंसते हुए बोले – आप ही के जैसे पण्डित के गुदा मार्ग में । बेचारा ठग ब्राह्मण लज्जित होकर वहां से अपने घर की ओर भाग चला ।

निर्मला हंसती हुई बोली कि अब मैं पांचवी कहानी कहती हूँ । ध्यान देकर सुनो ।

5. गोनू झा के घर में चोर घुसा

एक दिन गोनू झा के घर में चोर घुस गए । गोनू झा जब रात में भोजनोपरांत अपनी प्रिय पत्नी के लिए पलंग पर गए तो उनकी नजर चोर

पर जा पड़ी । वह अपनी पत्नी से हंसते हुए बोले – प्रिये, जब तुम्हें पुत्र होंनगे तो क्या नाम रखोगी ?

बेचारी ओझाइन हंसती हुई बोली कि पुत्र पैदा होगा तो देखा जायेगा, फिर भी गोनू झा नाम रखने का जिद करने लगे । ओझाइन बोली कि आप जो कहेंगे वही रखूंगी । गोनू झा हंसते हुए बोले कि उसका नाम राजा रखना ।

जब दूसरा पुत्र जन्म लेगा तो उसका नाम क्या रखोगी ? ओझाइन बोली कि वह नाम भी आप ही कथनानुसार रखूंगी । गोनू झा कहने लगे कि उसका नाम दारोगा रखना । अगर तीसरा पुत्र जन्म लेगा तो उसका नाम क्या रखोगी ?

ओझाइन बोली कि वह नाम भी आप ही के कथनानुसार रखूंगी । गोनू झा हंसते हुए बोले कि उसका नाम चौकीदार रखना । फिर चौथे का नाम भी चोर रखा गया । तब गोनू झा ओझाइन से बोले कि अब चारों पुत्र कहीं खेलने जायेंगे तो एक ही बार चारों पुत्रों को कैसे पुकारोगी । जरा जोर से पुकारों तो बेचारी ओझाइन जोर से चिल्लाती हुई बोली – राजा, दारोगा, चौकीदार, चोर ।

मध्य रात में राजा, दारोगा तथा चौकीदार, चोर का नाम सुनकर लोग दौड़ पड़े और चोर को पकड़ लिया । गोनू झा की चालाकी से चोर पकड़ा गया ।

अब सुधा छठी कहानी कहने लगी ।

6. आँख वाला अंधा

एक दिन राजा ने सभी दरबारियों के बीच गोनू झा से पूछा कि मुझे यह बताइये कि संसार में कितने आँख वाले और कितने अंधे हैं ।

यह सुनकर गोनू झा बोले कि संसार में सभी अंधे है । सिर्फ मैं ही आंख वाला हूं । राजा ने कहा कि इसका कुछ प्रमाण आप दे सकते हैं । गोनू झा हंसते हुए बोले कि दो-चार दिन में इसका प्रमाण मैं अवश्य दूंगा ।

दूसरे दिन राजा अपनी सेना के साथ शिकार खेलने के लिए जा रहे थे । उनके प्रस्थान करने के पहले ही गोनू झा रास्ते के किनारे बैठकर रस्सी

बांटने लगे । राजा उसी रास्ते से शिकार खेलने के लिए निकले । ज्योंहि राजा की नजर गोनू झा पर पड़ी राजा झट गोनू झा से पूछ बैठे – गोनू झा यहां सड़क के किनारे आप क्या कर रहे हैं ?

गोनू झा हंसकर बोले – धर्मावतार ! हुजूर का नाम भी आज अंधे के खाते में लिए रहा हूं । राजा ने कहा – क्यों ? गोनू झा बोले – हुजूर ने मुझसे अंधों का हिसाब पूछा था । हुजूर साफ देख रहे है कि हम डोरी बांट रहे हैं तब भी पूछ रहे है कि तुम क्या कर रहे हो । यही हुजूर के अंधों का प्रमाण है ।

राजा खुश होकर उन्हें खूब पारितोषिक दिया ।

निर्मला बोली – सखी, अब मैं सातवीं कहानी कहती हूँ । ध्यान देकर सुनो ।

7. गोनू झा का श्राद्ध

राजा शिव सिंह गोनू झा से बराबर कहा करते थे कि आपके मरने पर आपके श्राद्ध में आपके पुत्र को काफी सहायता करूंगा । एक दिन गोनू झा इस बात की परीक्षा करने का विचार किया ।

वह अपने पुत्र को उतरी पहना कर राजा के दरबार में सहायता के लिए भेजा और स्वयं दो-चार दिन के लिए घर में छिप गए । उसने अपने पुत्र से कहा कि दरबार में जाकर राजा से कहना कि हमारे पिताजी स्वर्गवासी हो गए । इसलिए अपने कथनानुसार मुझे उनके श्राद्ध के लिए सहायता करें ।

राजा गोनू झा की मृत्यु का समाचार सुनकर बहुत उदास हुए और तुरन्त गोनू झा के पुत्र को दस हजार रूपया देने की आज्ञा दी ।

हुक्मनामा का पत्र लेकर गोनू झा का पुत्र बजीर, दीवान और खजांची के पास गया । रूपया तुरन्त निकासी कराने के लिए सबों ने एक-एक हजार रूपये घूस मांगी ।

बाकी सात हजार रूपये लेकर गोनू झा का पुत्र अपने पिता के पास आया । दूसरे दिन गोनू झा प्रातः स्नान-पूजा से निवृत्त होकर राजा के दरबार में आये ।

सभी गोनू झा को देखकर आश्चर्यचकित हो गए । राजा ने गोनू झा से कहा कि आपके पुत्र द्वारा मालुम हुआ कि आप मर गए । गोनू झा ने हंसते हुए जवाब दिया – जी मैं एक बार के मरने से सबको पहचान गया । गोनू झा रिश्वत का सभी समाचार राजा से कह सुनाया ।

यह सुनकर राजा तीनों कर्मचारियों को जुर्माना किया और फिर ऐसा न करने की चेतावनी दी ।

सुधा बोली – सखी, अब मैं आठवीं कहानी कहती हूं ।

8. गोनू झा ने बैल खरीदा

एक दिन गोनू झा किसी गांव से बैल बीस रूपये में खरीद कर लिये आ रहे थे, रास्ते में बहुत से आदमी उनसे बैल की कीमत पूछने लगे । गोनू झा तंग होकर अपने दिल में विचार किया कि जब रास्ते में लोगों ने बैल का कीमत पूछते-पूछते तंग कर दिया तो गांव में और तंग करेगा, इसलिए उसने अपने गांव के बाहर रहड़ के खेत के बीच में जाकर बैल को बांध दिया । वह स्वयं गांव घर आये और गांव वालों से कहा कि गांव के बाहर रहड़ के खेत में मैंने एक भयानक बाघ देखा है ।

यह समाचार सुनकर गांव के सभी आदमी अस्त्र-शस्त्र लेकर आये और रहड़ के खेत के चारों तरफ से घेर लिया । गोनू झा भी उन लोगों के साथ गए ।

गोनू झा ने कहा कि आप लोग बाहर ही रहे । मैं भीतर रहड़ के खेत में से बाघ को खींचता हूं । यह कहकर गोनू झा रहड़ के बीच से बैल ले आये और सबों से कहने लगे कि मैं बैल की कीमत कहते-कहते तंग आ गया हूं । मैंने सोचा कि गांव में तो और भी लोग मुझे बार-बार बैल की कीमत पूछेंगे । इसलिए मैंने सबों को एकत्र करने के लिए बाघ का नाम कहा था ।

अब आप लोग एक ही बार सुन लें कि इस बैल का मोल बीस रूपया है । अब मुझसे कोई बार-बार नहीं पूछेगा ।

निर्मला बोली – सखी, अब मैं नवी कहानी कहती हूँ ।

9. मरकर जब पहचाना

एक बार गोनू झा के यहाँ एक साधु आये। उन्होंने लोगों को बहुत उपदेश दिए। गोनू झा भी साधु के उपदेश सुने। उनके मन में एक कौतुक सुझा। उन्होंने सोचा कि मरने पर लोग कैसे पराये बन जाते है। इसकी जांच करनी चाहिए। वे हंसोड़ तो थे ही बात भी उनको बहुत जल्दी सुझती थी।

एक दिन वे सांस रोक कर पड़े रहे। आँख मुंद ली। अपने को ठीक मुर्दा जैसा बना लिया। सारे नगर में तहलका मच गया कि गोनू झा मर गए, लोग दौड़े आये। सभी रोने-पीटने लगे। कोहराम मच गया।

लोगों ने देखा कि आँख बन्द है। केवल धुकधुकी बाकी है। लोगों ने उनको चटपट घर से बाहर निकाल दिया। आँगन जमीन पर सुला दिया और कपड़े से उनको ढँक दिया।

लोग उन्हें शमशान घाट ले जाने की तैयारी करने लगे उनके कानों में सोने के कुण्डल थे। उनकी मां को याद आई।

उसने लोगों से कहा – अरे देखो, मेरा बेटा तो चला ही गया, उसके कान में सोने का कुण्डल है। उन्हें तो निकाल लो।

लोग कुण्डल खोलने के लिए गोनू झा के पास पहुँचे, कुण्डल खोलने लगे। अब गोनू झा से नहीं रहा गया, वे हँसते-हँसते उठकर बैठ गये। अब तो लोगों का आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

गोनू झा ने हँसकर कहा – एक बार मरने पर दुनिया को पहचान गया।

सुधा बोली – हे सखी, अब मैं दसवीं कहानी कहती हूँ।

10. एक टोकरा धान

मिथिला में कमला नाम की नदी है, उस नदी के किनारे गोनू झा का खेत था, लेकिन उपज कभी न होती थी, सब साल सारा धान कमला नदी की बाढ़ में बह जाता था। गोनू झा बड़े सोच में पड़े।

आखिर उन्होंने कमला नदी से विनती की – हे कमला माता, यदि इस

साल धान की उपज खूब हो तो 101 जीवों की बलि चढ़ाऊँगा ।

उस साल गोनू झा के खेत में खूब धान हुआ, गोनू झा बड़े खुश हुए लेकिन अब दूसरी चिन्ता उन पर सवार हुई । 101 जीव लायें कहाँ से ?

उनको एक उपाय सूझ गया, उन्होंने एक सौ एक मच्छरों को पकड़ा । उन्हें मार कर कमला नदी में बहा दिया ।

रात में गोनू झा ने सपने में देखा कि कमला बिगड़ रही है, गोनू झा हाथ जोरकर बोले – मुझसे कौन अपराध हुआ ?

कमला नदी ने बिगड़ कर कहा – अच्छा जाओ, तुम कितना भी खेती करोगे एक ही टोकड़ा धान होगा ।

गोनू झा की नींद टूट गई, वे बड़े सोच में पड़े, आखिर फिर उन्होंने एक उपाय सोचा । धरती के अन्दर एक बड़ा-सा गढ़ खोदा । उसके मुंह के लिए बहुत छोटी सी जगह रखी, उस पर एक टोकड़ा रख दिया । उस टोकड़े के पेंदे में छेद कर दिया ।

गोनू झा ने अपने सब मजदूरों से कहा – जितना धान हो इसी टोकड़े में रखते जाओ, मजदूरों ने वैसा ही किया ।

मजदूर सारा दिन रखते रह गए, किन्तु वह टोकड़ा नहीं भरा । एक-दो मन को कौन पूछे सौ मन धान रखा जा चुका था । रात हो आई मजदूर थक गए थे ।

दूसरे दिन के लिए काम रोक दिया ।

रात में गोनू झा ने फिर सपने में देखा, कमला नदी हंसती हुई आई । वे गोनू झा की पीठ ठोक कर बोली – मैं हारी तुम जीते ।

निर्मला बोली – सखी, मैं ग्यारहवीं कहानी कहती हूँ ।

11. गोनू झा का स्वर्ग से बुलावा

गोनू झा एक राजा के दरबारी थे, वे बड़े चतुर थे । राजा को राज-काज में मदद किया करते थे, उनका खूब मनोरंजन भी करते थे ।

राजा उन्हें प्राणों से बढ़कर मानते और लोग भी उन्हें खूब चाहते थे । उसकी उन्नति देख सारे दरबारी जलने लगे, उन्हें मिटा डालने का उपाय सोचने लगे, उन दरबारियों में नाई भी था ।

उसे अपनी बुद्धि का घमण्ड था। उसने गोनू झा को मिटा देने का बीड़ा उठाया।

गांव के बाहर राजा के पिता की समाधि थी, राजा प्रतिदिन अपने पिता की समाधि पर फूल चढ़ाने जाया करते थे। पिता पर उनकी अटूट श्रद्धा थी, नाई ने इससे लाभ उठाना चाहा। उसने एक चाल चली।

एक दिन राजा जब पिता की समाधि पर फूल चढ़ाने पहुँचे तब उस पर उन्होंने एक पुर्जा रखा पाया।

पुर्जे में लिखा था – पुत्र तुम बड़े भक्त हो, तुमसे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ। स्वर्ग में मुझे पूजा-पाठ करने में बड़ी दिक्कत होती है। अतः मेरे ऊपर तुम्हें कुछ भी ख्याल हो तो शीघ्र गोनू झा को मेरे पास भेज देते।

गांव के पूरब वाले श्मशान में जो मिट्टी का टीला है, उसपर उनको बैठा देना और उनके ऊपर दो सौ गाड़ी पुआल रख कर उसमें आग लगा देना, बस वे सीधे मेरे पास पहुंच जायेंगे।

मैं कुछ दिनों के बाद फिर उनको वापस भेज दूंगा।

आशीर्वाद
तुम्हारा स्वर्गीय पिता

पूर्जे को पढ़कर राजा चकराये, ऐसे आश्चर्य की बात तो उन्होंने कभी नहीं देखी थी। वे मन ही मन बहुत तर्क वितर्क करने लगे।

गोनू झा के शत्रुओं ने यह जाल रचा है या यह सचमुच पिताजी की ऐसी आज्ञा हुई उसका निश्चय न कर सके।

उस दिन दरबार में आकर उन्होंने पूर्जे का हाल सबको सुनाया, सारे दरबारी खुशी से भर गए। कोई कहने लगा – गोनू झा बहुत भाग्यवान है इसलिए उन्हें स्वर्ग में महाराज ने याद किया है।

किसी ने कहा – गोनू झा कितने बड़े पुण्यात्मा है कि उन्हें जीते ही स्वर्ग में रहने का सौभाग्य प्राप्त होगा, कोई आह भरकर कहता – हाय हम लोगों को ऐसा सौभाग्य कहाँ यदि मुझे भेजा जाय तो मैं सहर्ष जाने को तैयार हो जाऊंगा।

इस पर कई दरबारी मैं जाऊंगा, मैं जा सकता हूं आदि कहकर अपनी आतुरता प्रकट करने लगे।

इस पर नाई ने कहा – महाराज ! जिसका बुलावा आया है, उसे ही जाना चाहिए नहीं तो स्वर्गीय महाराज के मन में खेद होगा।

साधारण आदमी से काम नहीं चल सकेगा, तभी तो गोनू झा को बुलाहट हुई है।

इधर राजा बड़े सोच में पड़े थे, वे मन में सोचते – यह असम्भव बात है, दो सौ गाड़ी पुआलों में यदि आग लगाई जायेगी तो उसके तले में बैठा आदमी कैसे बच सकेगा ?

कहीं दुष्टों ने गोनू झा को मार डालने का कोई षडयंत्र तो नहीं किया है ? अथवा सचमुच पिताजी ने ही तो यह पुर्जा नहीं भेजा है ? क्योंकि उनकी लिखावट पिताजी की लिखावट पिताजी की लिखावट से मिलती है। अन्त में किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो उन्होंने गोनू झा से राय पूछी।

गोनू झा अब तक चुपचाप बैठे सारा हाल सुन रहे थे, दरबारियों के षडयंत्र का उन्हें अनुमान लग गया था। उन्होंने सोच लिया कि अवश्य मुझे मार डालने के लिए यह कुचक्र किया गया है, इस षडयंत्र को कैसे विफल किया जाये यही सोच रहे थे उनकी तीव्र बुद्धि ने कुछ ही क्षणों में इस समस्या का समाधान ढूंढ निकाला।

उन्होंने राजा से कहा – महाराज ! मैं स्वयं जाने के लिए तैयार हूँ, किन्तु तीन शर्तों पर।

1. मुझे तीन मास का समय दिया जाय।

2. जब तक मैं स्वर्ग से न लौटूँ, तब तक मेरे परिवार को प्रति मास दस हजार रूपये पारिश्रमिक के रूप में मिलता रहे।

3. इस समय मुझे पचास हजार रूपये मिले, ताकि मैं अपने घर का इन्तजाम कर लूं।

राजा चकित होकर कहा – क्या आप स्वर्ग जायेंगे ? क्या आप भी इस बात को सत्य मानते हैं।

गोनू झा बोले – श्रीमान् मैं सचमुच स्वर्ग जाऊँगा, आप चिन्ता न करें। उदास भाव से राजा ने गोनू झा का शर्त स्वीकार कर लिया, सारे दरबारियों के मुखों पर आनन्द और आश्चर्य के भाव थे। नाई अपने विजय पर मुस्कुरा रहा था।

तीन मास के बाद राज्य के बहुत से लोग गांव के पूरब वाले श्मशा में इकट्ठे हुए, सारे दरबारी तथा राजा स्वयं भी वहां उपस्थित थे। प्र बहुत दुःखी थी। राजा स्वयं रो रहे थे – किन्तु गोनू झा के मुख पर आन का भाव था। हँसते हुए वे मिट्टी के टीले पर बैठ गए।

देखते ही देखते पुआलों से उन्हें ढंक दिया गया। सौ-सौ गाड़ी पुआल का वहाँ पहाड़ों-सा खड़ा हो गया। फिर उसमें आग लगा दी गई। धूं-ध करके आग की लपट आकाश को छूने लगी, उसी समय दरबारियों के आँखों में आँसू निकल पड़े थे।

सारी प्रजा रो रही थी, राजा तथा दरबारी रो रहे थे। केवल खुश था नाई। देखते-देखते सारा पुआल राख बन गया। उस स्थान पर दहकते राखों का ढेर लग गया। सब अत्यन्त दुःखी मन से घर लौटे। दरबारियों के आँखों का कांटा साफ हो गया।

इस घटना को छः मास बीत गए, गोनू झा अब तक लौटकर नहीं आये। राजा ने समझ लिया कि हमें धोखा दिया गया है। गोनू झा के बिना राजा का कहीं मन नहीं लगता था।

वे बहुत दुःखी रहा करते थे, दुःख से वे सूखकर कांआ हो गए थे।

एक दिन वे दरबार में गोनू झा के सम्बन्ध में ही बातचीत कर रहे थे। एकाएक द्वारपाल ने आकर खबर दी कि गोनू झा आ रहे हैं।

अपने कानों पर विश्वास न किया तो किसी ने द्वारपाल को पागल समझा।

लोग आश्चर्य में भरकर इस खबर को सत्य माने या झूठ, यही सोच रहे थे कि गोनू झा आते दिखाई पड़े। सबों ने आँखें फाड़-फाड़ कर देखा।

गोनू झा पहले से अधिक मोटे-ताजे हो गए थे, किसी-किसी को अपनी आँखों पर सन्देह हुआ। कोई उन्हें भूत समझ कर दो कदम पीछे हट गया और राजा स्तम्भित रह गए।

गोनू झा ने आकर राजा को प्रणाम किया और एक कागज राजा को दे दिया। बड़ी देर बाद राजा बोले – गोनू झा ! क्या आप सचमुच जीवित है ?

गोनू झा ने हंसकर कहा – अभी तक तो श्रीमान की कृपा से जीवित

हूँ, यह कहते हुए उन्होंने नाई की ओर देखा। नाई के प्राण तो उनको देखते ही सूख गए अब भय के कारण उसका सारा शरीर पसीने से तर-बतर हो गया।

गोनू झा ने कहा – महाराज ! मैं स्वर्ग से आ रहा हूँ। आपके पिता बड़े आनन्द से हैं, किन्तु उन्हें हजामत बनाने में तकलीफ होती है। अतः उन्होंने उस नाई को बुलाया है, यही बात पत्र में भी लिखी हुई है।

गोनू झा की बात सुनते ही नाई ने वहां से रफ्फू-चक्कर होना चाहा, किन्तु सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया। अब जो भय के मारे उसकी बुरी दशा हो गई। सारे दरबारी आश्चर्य से अवाक थे।

राजा ने नाई से कहा – उस बार तो खूब बढ़-चढ़कर बोल रहे थे, अब स्वर्ग जाते दुःख क्यों होता है ? जब गोनू झा वहाँ से हो आये हैं तब तुम्हें भय करने का क्या कारण है ?

नाई ने देखा कि अब बिना भेद खोले काम न चलेगा, अब ये लोग मुझे पुआल के नीचे जलाकर अवश्य ही मार डालेंगे। अतः वह काँपता हुआ बोला – सरकार ! मुझे क्षमा करें गोनू झा को स्वर्ग से बुलाने वाला चिट्ठी को मैंने ही जान करके लिखा था। स्वर्ग से कोई बुलावा नहीं आया था।

गोनू झा कोई जादू जानते हैं इसी से उस आग से बच गए, किन्तु मैं तो जलकर मर ही जाऊंगा।

अब तो राजा आश्चर्य एवं क्रोध से भर गए। उन्होंने गोनू झा की ओर देखकर पूछा – क्या बात है, सच-सच कहिए।

गोनू झा ने कहा – महाराज ! उस पत्र को देखते ही मैं समझ गया था कि मेरे साथ कोई चाल खेली जा रही है। अतः अपने बचने का उपाय सोचकर स्वर्ग जाना स्वीकार कर लिया था।

तीन मास की छुट्ठी लेकर मैंने अपने घर से उस मिट्ठी के टीले तक एक सुरंग खुदवा ली। उनके मुंह घास-फुसों से इस तरह ढंका हुआ था कि किसी को पता तनिक भी नहीं चलता था। जब मेरे ऊपर पुआल के बोझ को डाले जाने लगे और जब मैं आप लोगों की नजरों से छिपने-सा लग गया, तब मैं धीरे से उस सुरंग के रास्ते से होकर अपने घर पहुँच गया।

उधर आप लोगों ने समझा कि गोनू झा जलकर मर गए । मेरे दुश्मन मुझे मरा हुआ समझने लगे और मैं अपने घर में आराम करने लग गया। मैंने गुप्त रूप से पता लगा लिया कि यह सारा षड्यंत्र नाई का किया हुआ है ।

मैं वैसे अगर यह सब आप सबों से कहता तो शायद आप लोगों को हम पर विश्वास नहीं होता, अतः प्रमाण के साथ आज मैं यह बात आपके सामने रख रहा हूँ ।

राजा तथा सारे दरबारी गोनू झा की बुद्धि पर दंग रह गए । उस नाई को कठोर दण्ड मिला तथा गोनू झा को काफी पुरस्कार मिला ।

सुधा बोली – हे सखी, मैं बारहवीं कहानी कहती हूँ ।

12. आँखों का सौदागर

गोनू झा और पलट पांडे दोनों एक दरबार में नौकर थे । दोनों ही बराबरी के नौकर थे । दोनों में बराबर चढ़ा-उतरी चलती थी । एक अपने को बड़ा साबित करते, तो दूसरे राजा साहब के बाद में अपना ही नम्बर रखते थे । आये दिन दोनों में दो-चार झड़प हो ही जाती थी ।

वैसे भी गोनू झा का राज-दरबार में विशेष आदर और मान होता था। इसलिए उनसे सारे दरबारी जलते रहते थे । पलट पांडे हमेशा ही उन्हें नीचा दिखाने की कोशिश में लगे रहते थे । एक दिन उन्होंने भरे दरबार में ऐलान कर यह कहा कि जो कोई एक पतले मुंह वाली बड़ी सुराही में पांच सेर का बड़ा कादीम (कोहरा) ला दे उसे सबसे बड़ा बुद्धिमान समझूँगा ।

उनकी बातें सुनकर बहुत से दरबारी तो अपना सिर ही खुजलाने लग गए । किसी ने उन्हें पागल ही समझा और किसी ने इस बात को मजाक जाना ।

लेकिन जब पलट पांडे ने बार-बार अपनी इस बात को दोहराते ही रहे, तब सबको बड़ा आश्चर्य हुआ ।

राजा ने पूछा – क्या यह संभव है ? इसी में प्रत्येक लोगों की बुद्धि की परीक्षा हो जायेगी । क्या यह सम्भव है, कोई ऐसा कर सकता है ।

भला गोनू झा इस ललकार को सुनकर कब चुप बैठने वाले थे ।

उन्होंने झट से उठकर कहा – श्रीमान् ! यदि छः मास का समय मिले तो मैं यह चीज ला सकता हूँ ।

सभी दरबारी अचकचा गए । राजा ने उनकी बात को स्वीकार कर लिया । घर आकर गोनू झा बड़े सोच में पड़ गए । आवेश में आकर प्रतिज्ञा तो कर ली, किन्तु उपाय सूझता ही नहीं था, कई दिनों तक वे इसी सोच में पड़े रहे । उनके आँगन में कदीमा की एक लता थी । एक दिन उनकी नजर कदीमा की एक छोटी-सी बतिये पर पड़ी, तुरन्त वे खुशी से उछल पड़े । उन्हें एक उपाय सूझ गया । वे निश्चिंत होकर दरबार में आने-जाने लगे ।

जिस दिन छठा महीना पूरा हुआ उस दिन राजा ने उनसे यह पूछा – क्या गोनू झा ! आज सुराही में कदीमा लाने का दिन है न.....कहाँ है वह ।

जी हां हुजूर ! वह देखिये, सुराही में लिए मेरा नौकर आ रहा है, अपनी उंगली उठाते हुए गोनू झा ने कहा –

नौकर के आने पर सबने आश्चर्य से देखा कि एक पतले मुंह वाली बड़ी सुराही में यही लगभग दस सेर का कदीमा रखा हुआ है, सभी लोग अवाक् रह गए तथा मन ही मन में गोनू झा की बुद्धि की तारीफ करने लगे । राजा ने कहा – मैं आपसे बहुत खुश हूँ, इसके लिए आपको इनाम मिलेगा । पर यह तो बताइये कि यह सब हुआ कैसे ? आप जादू तो नहीं जानते ?

राजा की बात सुनकर गोनू झा ने हंसकर कहा – नहीं हुजूर ! यह तो बहुत ही छोटी सी बात है । एक महीने की बतिये को मैं इस सुराही के अन्दर में रख दिया था । वही बढ़कर आज इतना बड़ा कदीमा हो गया है ।

पलट ने जो सोच रखा था, ठीक उसका उलटा ही हुआ । अतः वे क्रोध से हाथ मलते ही रह गए ।

पलट पांडे अब अपनी दाल को न गलता देख वह बहुत ही झुंझलाये । गोनू झा को वह छकाने के लिए अब दूसरा उपास सोचा । एक दिन उन्होंने भरे दरबार में कहा – महाराज ! बहुत दिन हुए, मैंने अपनी एक आँख को गोनू झा के हाथ में गिरवी रखी थी । इस बात को बीते हुए कई वर्ष हो गए । अब मेरी आँख मुझे वापस मिलनी चाहिए ।

राजा ने कहा – कैसे बेवकूफ हो जी, भला कहीं आँख भी गिरवी रखी जाती है ।

तब तक गोनू झा को एक चालाकी सूझ गई, पलट पांडे ने उन्हें जलील करने का एक उपाय किया था । उन्होंने सोचा कि इन्हीं के दांव पर इन्हें ही चीत कर दूं, तब वह झट से बोल उठे, हाँ श्रीमान् । मैंने इसकी आँख ठीक गिरवी रखी है, मैं तो इसका व्यापार ही करता हूँ ।

कल मैं इनकी आँख दरबार में लेता आऊँगा, किन्तु मूल-ब्याज समेत हमारे बारह हजार रूपये इन पर निकलते हैं । अगर ये हमारे बारह हजार रूपये वापस दे दें तो मैं इनकी आँख को वापस कर दूँगा ।

पलट पांडे ने सोचा – कि यह समझता है कि न बारह हजार रूपये होंगे, न आँख छुड़वाने का नाम यह कभी लेगा, यदि मैं रूपये देना स्वीकार कर लूँ तो बच्चू को लेने के देने पड़ सकते हैं । कल मैं इनके आँख निकाल कर ही छोड़ूंगा ।

इस तरह की बात सोचकर उन्होंने उसके रूपये देना स्वीकार कर लिया, राजा और सभी दरबारीगण आश्चर्य से इन दोनों के मुंह देखने लगे ।

घर पर आकर गोनू झा ने कुछ बहेलियों को बुलाया और उन्हें जानवरों की आँखें लाने की आज्ञा दी, सुबह होते-होते हरिण, सूअर, कुत्ते, बिल्ली यानि कि कई दर्जन आँखें जमा हो गई । गोनू झा ने उनको शीशे के एक सन्दूक में भर लिया तथा दरबार में पहुँचे । उस दिन दरबार में पलट पांडे ने उनसे आँख माँगे वे तो तैयार थे ही उन्होंने आँख वाली सन्दुकची पलट पांडे के आगे रख दी और कहा – इसमें आपकी कौन-सी आँखें है, उसे चुन लीजिए । अगर वह आँख अपने स्थान पर ठीक नहीं बैठी तो आपको दण्ड मिलेगा ।

अब तो पलट पांडे चकराये । उन्होंने झुंझलाकर कहा – इनमें मेरी आँख नहीं है ।

गोनू झा ने मुस्कुराकर कहा – तो मैं आपकी यह दूसरी आँख को निकालकर उसके तौल के अनुसार आपकी आंख चुन देता हूं । अब पलट पांडे को अपने किए पर पछतावा होने लगा, अब तो वह इस बात को टालने की इच्छा से बोले – जाने दीजिए मैं आँख नहीं लूँगा ।

गोनू झा बिगड़कर बोले – वाह, यह कैसे हो सकता है । मेरा तो डूब रहा है ।

व राजा को पलट पांडे की सारी चाल समझ में आ गई । तब उन्होंने ते हुए कहा – देखो पलटू ! अब तो तुम्हें गोनू झा के बारह हजार देने ही होंगे और तुमने डाह के कारण एक भले आदमी को अकारण न किया है । इसलिए आज से हमारे दरबार से हटाये जाते हो ।

गोनू झा खूब इनाम पाकर घर लौटे, पलट पांडे को लगा बारह हजार दण्ड ।

निर्मला बोली – हे सखी, अब मैं तेरहवीं कहानी कहती हूँ ।

13. नई कहानी

एक बार गोनू झा देश घूमने चले, जाते-जाते वह एक राज्य में पहुँचे । हां का राजा बड़ा धूर्त्त था । उसने अपने राज्य में मुनादी करवा दी थी कि जो कोई मुझे नई कहानी सुनायेगा उसे दस हजार रूपये ईनाम में दूँगा ।

लेकिन ऐसी कहानी सुनानी होगी, जिसे कोई नहीं जानता हो । उस राजा के कुछ खास दरबारी थे । वे भी राजा के साथ कहानी सुना करते थे । जब कोई आदमी कहानी सुनाता तो वे लोग बोल उठते थे – 'वाह यह कहानी तो मैं पहले भी सुनी है । यह नई नहीं है ।' इसलिए कहानी सुनाने वाले को ईनाम नहीं मिलता ।

सैकड़ों लोग कहानियां सुनाने रोज आया करते थे । रंग-बिरंग की कहानियां लोग रोज उसे सुनाते थे । लेकिन किसी को भी ईनाम नहीं मिलता था । गोनू झा को यह बात मालूम हुई ।

वह उस राजा को छकाने के लिए सोचने लगे । राजा प्रतिदिन शाम को दो घण्टे कहानी सुना करता था । गोनू झा उसे कहानी सुनाने पहुँचे ।

दरबारी लोग बैठे राजा सिंहासन पर विराजे । गोनू झा ने कहानी शुरू की ।

बहुत दिनों की बात है, उस समय में आप लोगों का जन्म भी नहीं हुआ था । आपके पिता जवान थे । एक बार शिकार खेलने वे वन में गए । वह वन बहुत बड़ा था । सूरज की रोशनी भी उसमें ठीक से नहीं पहुँच पाती

थी । आपके पिता के पास में बहुत बड़ी सेना थी । वन में पड़ाव डाला गया । खेमे तान दिए गए । उसके बाद में शिकार की खोज शुरू हो गई । राजा और उनके साथी बड़ी देर भटकते रहे, कोई शिकार नहीं मिला । सभी बड़े उदास हुए, दिन बहुत थोड़ा बाकी रहा । सभी लोग खेमे की ओर लौटने लग गए । एकाएक बहुत बड़ा सूअर दिखाई पड़ा । उसके दांत बहुत भयंकर थे, सूअर को देखते ही सिपाही लोग उस पर टूट पड़े । राजा ने भी अपना घोड़ा सूअर के पीछे छोड़ दिया ।

सूअर बड़े जोर से भागा । सभी सिपाही पीछे छुट गए केवल राजा का घोड़ा सूअर के पीछे-पीछे दौड़ता रहा । वे लोगों की आंखों से ओझल हो गए ।

इधर सभी शिकारी एक जगह जुटे, राजा की खोज शुरू हुई । इतने में एक बहुत बड़ा बाघ एक झाड़ी से निकला । बाघ को देखते ही कु शिकारियों ने उस पर तीर चलायें । एक तीर बाघ को लगा अब तो बा बाघ बिगड़ा झपटा एक हाथी के ऊपर । बाघ को झपटना था कि स हाथी तितर-बितर हो गए, घोड़े भी भाग गए ।

जिस हाथी पर बाघ झपटा था, उस पर एक बहादुर आदमी सवा था । बाघ हाथी का हौदा पकड़कर झूल गया और हाथी तेजी से भाग उस बहादुर आदमी ने तलवार से बाघ के अगले दोनों पैर को काट डा बाघ जमीन पर गिर गया, किसी तरह से जान बचाकर लोग डेरे पर पहुं लेकिन राजा का कोई पता न चला ।

उधर राजा सूअर का पीछा करते-करते बहुत ही दूर चले ग अचानक एक जगह सूअर किसी झाड़ी में घुस गया । लाख प्रयत्न क पर भी नहीं मिला, शाम हो चुकी थी, जंगल में घना अंधकार छा गया राजा बहुत घबड़ा गए, घोड़े से वह नीचे उतर गए । भूख के मारे उन बहुत बुरा हाल था । वे भोजन की तलाश में चल पड़े और घोड़े को छ दिया ।

कुछ दूर जाने पर उन्हें एक जगह रोशनी दिखाई दी, राजा उसके भी घुस गए । महल में कोई न था, महल खूब सजाया हुआ था जान पड़ता कि कोई राजमहल हो । बेशकीमती कपड़े फर्श में बिछे थे । शीशे की

जीब तरह की रोशनी जल रही थी । सारा महल खुशबू से गम-गम रहा था ।

नीचे की दरी में हीरे-मोतियों का ढेर लगा था, किसी कमरे में -तरह के कपड़े रखे हुए थे । कमरे में भांति-भांति के हथियार लटके थे । वे हथियार बड़े ही भारी थे । राजा ने इसमें से एक तलवार को ों में पकड़ कर उसे उठाना चाहा, लेकिन उनसे उठ न सका ।

पचास-पचास मन के भाले थे, सौ-सौ मन के ढाल थे, चालीस-चालीस की तलवार थी । राजा अचरज में थे कि बाप रे इन हथियारों को कौन लाता होगा । लेकिन आदमी का नामोनिशान वहां पर कहीं नहीं था ।

राजा यह देखकर बड़े सोच में पड़ गए, भय के मारे उनकी जान निकल ी थी । लेकिन खाने का कोई सामान कहीं दिखाई नहीं पड़ता था ।

एक कमरे में कुछ आहट जान पड़ी । वे उसी ओर बढ़े, कमरा भीतर बन्द था राजा ने एक छेद से भीतर झांका ।

भीतर जो कुछ दिखाई दिया उसे देखकर वे अवाक रह गए । कमरे एक बहुत बड़ी मेज थी, वह बड़ी मोटी थी । उस पर तरह-तरह के फल जाये पड़े थे ।

एक बहुत बड़ा बौना दानव उसके पास बैठा खा रहा था । उस दानव पैर बहुत ही छोटे थे, मूँछे सात-सात हाथ की थी । वह फल खा रहा और शराब पी रहा था, उसकी आँख बड़ी-बड़ी और लाल थी । जिसे कर राजा डर गए और मन ही मन सोचने लगे – हे भगवान मैं कहां गया । यह तो दानवों का महल जान पड़ता है, यह सोचकर राजा वहां आगे चले ।

वह महल बहुत बड़ा था, उसमें कई राहें थी । राजा बाहर निकलने का भी भूल गए थे, वे भटकने लगे । थोड़ा चलने पर उनके कानों में गाने आवाज आई । आवाज बड़ी मोटी थी, अनजाने ही राजा, उसी ओर ने लगे । कुछ देर जाने पर एक खुबसूरत कमरे पर उनकी नजर पड़ी ।

कमरा खूब सजा हुआ था, सारा कमरा रोशनी से जगमगा रहा था । के चारों ओर फूल के पौधे लगे थे । कमरे में एक तरफ खुबसूरत पलंग हुआ था । उस पर तोशक-तकिया लगाया हुआ था, एक तरफ एक

छोटी-सी चौकी था। उस पर एक बड़े थाल में खाने के सारे सामान र... हुए थे। राजा भूखे तो थे ही, वे झटपट उस चौकी के पास पहुँचे औ... जी भरकर खाया।

खाने के बाद राजा को भय हुआ कि कहीं कोई दानव न आ जाये यह सोचकर वे तुरंत वहां से चल पड़े। कुछ दूर जाने पर उससे भी खुबसूरत दूसरी कोठरी मिली। जैसे ही राजा ने उसमें पैर रखा कि खुबसूरत ठण्डी हवा चलने लगी।

और फिर राजा को नींद आने लगी, आखिर राजा उसी में पड़े हुए एक पलंग पर लेट गए। लेटते ही नींद आ गयी, फिर तो उनको अपनी ही देह की सुधि न रही।

एकाएक बहुत जोर से जैसे आंधी आई हो। राजा ने पलटकर देखा तो वे चौंक पड़े। एक बहुत दानव उस घर में न जाने कहाँ से आ गया था उसकी नाक बड़ी और चिपटी हुई थी, उसके ओंठ मोटे थे। मुंह बहुत बड़ा था, ऐसा जान पड़ता था कि इस कान से उसके उस कान तक मुंह ही है वह दानव भयंकर रूप से हंस रहा था। राजा के तो होश उड़ गए, एकाएक उसने राजा को चुटियाँ पकड़ ली फिर गरज कर बोला –

ऐ ! तू हमारे यहां पड़ा हुआ है। आज घर बैठे मुझे भोजन मिल गया, परसों मेरे यहाँ भोज है तुझे मारकर खा जाऊँगा। हा.....हा.....हा.....हा..... यह कहकर वह जोर से हंस पड़ा। फिर उसने किसी नौकर को बुलाया। नौकर से राजा को कैद कर लेने को कहा, राजा कैद हो गये।

राजा बड़े सोच में पड़े, अब बचने का कोई उपाय नहीं जान पड़ा। वह जेल बहुत मजबूत था, वे भाग नहीं सकते थे, दो दिन में मरने का डर था। वे हरदम सोच में रहते थे। खाना-पीना सब छुट गया।

दूसरे दिन एक बड़ा-सा दानव तलवार लेकर पहुँचा, उसको देखते ही राजा उठकर खड़े हो गए। वह दानव बोला – ऐ आदमी तुझे मारूँगा। आज हमलोगों के यहाँ भोज होगा, तुझे मारकर कबाब बनाऊँगा। बड़ा ही उमदा खाना बनेगा, यह कहकर वह ओठ चटपटाने लगा।

राजा का खून भय के मारे सूख गया, फिर भी वे अपने जी को बिल्कुल कड़ा करके बोले – मुझे मत मारो ! मैं राजा हूँ जितना धन चाहोगे

ा धन दूँगा ।

यह सुनकर वह दानव हँसने लगा और बोला हा....हा....हा....धन नहीं हिए हमें तो कबाब चाहिए कबाब । यह कहकर उसने राजा के सारे ड़े फाड़ डाले । फिर उसको पकड़ लिया, उनको गर्दन दबाकर तलवार काटने लगा । एकाएक परी ने आकर उसका हाथ पकड़ लिया, वह व रुक गया । उसके हाथ से तलवार गिर गई ।

परी ने दानव से कहा – इसे मत मारो, आज मारोगे तो तुम्हारे राजा जायेंगे ।

उस दानव ने घबड़ा कर कहा – ऐसा क्यों होगा ?

परी बोली – आज इसे योंहि कैद में छोड़ दो, राजा बीमार है । तुमको ा रहे हैं ।

ऐ ! राजा की बीमारी कब हुई ? यह कहकर वह बाहर चला गया, परी ने राजा से कहा – राजा ! तू यहाँ कैसे आ गया ? अब तेरी जान ीं बचेगी ।

इस समय किसी तरह से मैंने तुझे बचा लिया है, लेकिन आगे बचना ा ही कठिन है । यदि तुम मेरे पास रहना मंजूर करो तो मैं तुझे बचा लूँ ?

राजा ने कहा – मैं कबूल करता हूँ, मुझे तुम तुरन्त यहाँ से छुड़ाकर ले ों ।

परी ने कहा – बहुत ठीक, तू अपनी आँख बन्द कर ।

फिर राजा ने आँखें बन्द की, जब उसने आँख खोली तब वह अचरज भर गया । उसने देखा कि एक बहुत ही बड़ी इमारत है, खूब सजी हुई । उसमें किसी चीज की कमी नहीं है । चारों ओर सुन्दर फुलवारी है । ठण्डी-ठण्डी हवा चल रही है, गीत सुनाई पड़ रहे है, चारों ओर खुशी खुशी वहाँ दिखाई पड़ रही है । लेकिन किसी का पता नहीं है ।

परी न जाने कहाँ गायब हो गई, राजा ने उसे बहुत ढूंढा लेकिन परी ो कहीं नहीं पाया । थोड़ी दूर पर उन्होंने देखा कि तरह-तरह की शकीमती कपड़े पड़े हुए थे, राजा ने उनमें से कुछ सुन्दर कपड़े पहन ाए ।

थोड़ी ही दूर पर उन्होंने मोतियों का एक ढेर देखा, वैसे वेशकीमती

मोती उन्होंने कभी नहीं देखे । झटपट उन्होंने कुछ मोती अपनी
लिए ।

फिर कुछ आगे गए, वहां उन्होंने बड़े-बड़े हीरे को उठा लिये
उनकी नजर सामने के एक पेड़ पर पड़ी, पेड़ के फल लाल थे

उसके पत्ते हीरे के थे, वज पेड़ सोने का था । राजा पेड़ को
और देखकर बहुत खुश हुए सोचा – वाह, यदि किसी उपाय से
को अपने राज्य में ले जाते तो कितना बढ़ियाँ होता ।

फिर वे उस पेड़ से एक लाल को तोड़ने लगे । तभी एक
झटका उनको लगा, वे दूर जा गिरे । खूब चोट आई और बेहोश

होश आने पर देखा कि वहां पर परी खड़ी होकर हंस रही है
देखकर लजा गए ।

परी बोली – राजा ! तू इतना लोभी है, इन हीरे-मोतियों के
तू लालच में फंस गया ।

मुझे बिना कहे-सुने फल तोड़ने लगा । हीरे-मोती भी तूने लिए
फल तो तुझे भोगना ही पड़ेगा । वह देख पानी में अपनी सूरत दे

तब राजा ने अपनी परछाई पानी में देखा तो वे डर गये उनका
के जैसा हो गया था । वे लोट-पोट कर रोने लगे । परी से बोले
कभी काम नहीं ऐसा करूंगा । किसी तरह से मुझे अपने रूप में
मैं आपका पैर पकड़ता हूँ ।

परी वहीं बैठ गई और राजा के सिर पर हाथ फेरते बोली – दे
मास के बाद मैं फिर आऊंगी । तब तेरा रूप बदल दूंगी । तब तक
रूप में यहां रह और देख, यह जादू का महल है । इससे भागने की को
न करना, नहीं तो जान चली जायेगी ।

यह कहकर परी वहां से गायब हो गई, राजा वहां रोते ही रह
अब वे वहां कैद हो गए, दिन पर दिन बीतने लगे । परी के नौकर
की देखभाल करने लगे और राजा दिन रात अपने नसीब पर रोते र

वह सोचने लगे कहाँ गया मेरा देश, न जाने राज-काज कैसा च
होगा । सभी लोग मेरे लिए सोच में पड़े होंगे । लेकिन वे कुछ कर तो स
नहीं थे ।

एक दिन राजा भागने भी लगे तो एकाएक ऐसी चोट लगी कि दिन
बेहोश पड़े रह गए, उस दिन से वो भागने का नाम भी न लेते ।
धीरे-धीरे पांच महीने बीत गए । एक दिन राजा महल के बाग में टहल
। एकाएक एक आदमी घोड़े पर जाता हुआ उन्हें दिखाई दिया । राजा
चा कहीं मेरा रूप देखकर वह डर न जाय । इसलिए वे अपने मुंह को
से छिपाने लगे ।

तब तक वह घुड़सवार उनके नजदीक आ गया, वह हंसकर बोला – मुंह
छिपाते हैं राजा साहब मैं डरूंगा नहीं ।

राजा अचरज में पड़ गए, वे बोले – तुमने कैसे पहचाना ? मेरा रूप
बदला हुआ है ।

उस आदमी ने कहा – भैया ! कई माह बाद आदमी की सूरत दिखाई
है ।

राजा ने कहा – मैं कब से इस महल में कैद पड़ा हूं, मैं कहीं भी जा
सकता । मेरा रूप भी भयंकर हो गया है । यदि तुम किसी तरह से
ना पहला रूप दे दो और यहां से छुड़ा दो तो जीवन भर मैं यह उपकार
भुलूंगा ।

उस जादूगर ने कहा – यह काम तो बड़ा कठिन है राजा साहब ! यदि
को पता चल जायेगा तो वह मेरी जान का ग्राहक हो जायेगी । लेकिन
दमी की मदद तो अपनी जान को देकर भी करनी चाहिए ।

यह कहकर उस जादूगर ने थोड़ा पानी लिया और कुछ पड़कर राजा
मुंह पर छिड़क दिया । देखते ही देखते राजा अपने असली रूप में आ
ए ।

वे जादूगर के पैर पर गिर कर बोले – भैया ! तुमसे मैं कभी भी उऋण
हीं होऊंगा । अब किसी तरह से यहां से भाग चलो ।

जादूगर ने कहा – यह जादू का महल है, बाग भी जादू का है बिना
री के हुकूम के न तो कोई इसके अन्दर आ सकता है, न बाहर जा सकता
।

लेकिन मैं भी जादूगर हूं, इसलिए मुझे कोई रोक-टोक नहीं । आप
रे साथ घोड़े पर बैठ जाईये । यह घोड़ा कुछ ही घण्टो में आपको अपने

राज्य में पहुचां देगा ।

राजा और जादूगर दोनों घोड़े पर चढ़ गया । फिर जादू महल
निकले । वे लोग कुछ ही दूर गए होंगे कि भयंकर आवाज सुनाई दे
फिर बड़े जोर आंधी आई, जादूगर ने राजा से कहा – आप
पर बैठकर भाग जाइये । मैं यही खड़ा रहूंगा, आपके भाग कर
खबर परी को मिल चुकी है । इसलिए वहां से दौड़ी आ रही है

मैं यहीं उसे रोक कर उससे लड़ाई करूंगा । तब तक आप अप
में पहुंच जाइयेगा । फिर परी आपका कुछ बिगाड़ न सकेगी ।

पहले तो राजा इस बात पर राजी नहीं हुए । लेकिन जादूगर के
समझाने पर राजी हो गए । फिर आंखों नें आंसू भरकर बोले –
तुमसे मैं किसी तरह उऋण नहीं हो सकता ।

जल्द ही परी को हराकर तुम मेरे पास आना । मैं तुमको अपना
राज्य दे दूंगा । यदि मर भी जाऊं तो मेरा बेटा तुमको आधा राज्य दे दे

यह कहकर वे घोड़े पर चढ़कर भाग गए । कुछ ही देर के बाद
बबूला होती हुई परी वहां आ पहुंची । आते ही जादूगर से लड़ने ल
पचास साल तक उन दोनों में जादू की लड़ाई होती रही ।

आखिर में हार मानकर परी भाग गई । तब जादूगर वहां से च
दस साल तक इधर-उधर भटकता रहा । आज वह आपके यहां आया

वह जादूगर मैं ही हूं । अब तो मैंने जादू का काम छोड़ दिया है
घटना को बीते हुए सात साल हो गए, यहां आने पर पता चला कि वे
मर चुके है ।

आप उनके लड़के है, मैं समझता हूं कि आपके बहुत से दरबारी
कहानी को जानते होंगे । अब आप अपने पिता का वादा पूरा कीजि

यह कहकर गोनू झा चुप हो गए, इस अद्भुत कहानी को सुनकर रा
सोच में पड़ गए वह बोला – मैं तो इस कहानी के बारे में कुछ नहीं जान
था ।

दरबारी लोग कैसे कहते कि हमलोग इस कहानी को जानते हैं, तब
आधा राज्य देना पड़ेगा । वे सब बोले – हमलोगों ने भी यह कहा
पहले-पहले सुनी है ।

गोनू झा हंसकर बोले – तब तो महाराज यह नई कहानी हुई, अब ईनाम
या जाय ।

और राजा को दस हजार रूपये देने पड़े ।

सुधा बोली – हे सखी ! अब मैं चौदहवीं कहानी कहती हूं ।

14. गोनू झा की बिल्ली

बहुत दिनों की बात है । मिथिला में गोनू झा रहते थे, वे बड़े ही चतुर
। मिथिला के राजा के दरबारी थे राजा उन्हें खूब मानते थे ।

एक बार राजा ने अपने दरबारियों की बुद्धि की परीक्षा ली । उन्होंने
रे दरबारियों को बुलवाया । सभी दरबारी आये ।

राजा ने कहा – मैं आप लोगों को एक-एक बिल्ली देता हूँ । बिल्ली
ो दूध पिलाने के लिए एक-एक दुधारू भैंस भी देता हूँ । इन दोनों को
पने-अपने घर ले जाएँ । बिल्ली को खूब खिलाएं-पिलाएं ।
वह जितना दूध पी सके पीने दें । एक साल के बाद मैं बिल्लियों को
खूंगा । जिसकी बिल्ली सबसे मोटी-ताजी होगी उसे ईनाम दूंगा और
जसकी बिल्ली पतली-दुबली होगी उसे दण्ड दूंगा ।

सभी दरबारी भैंस और बिल्ली के साथ अपने-अपने घर आये ।
बल्ली को खूब खिलाने-पिलाने लगे । गोनू झा भैंस को खूब खिलाते
पिलाते लेकिन भैंस जितना दूध देता सब बिल्ली ही पी जाती । चार-पांच
दिनों तक यही हाल रहा ।

गोनू झा को यह बात अखरने लगा, उन्होंने सोचा भैंस को इतना मेहनत
से पालता हूँ दाना-घास खिलाता हूँ, लेकिन सारा दूध बिल्ली ही पी जाती
है । यह तो ठीक नहीं है, यदि बिल्ली को दूध न दूँ तो वह दुबली हो जायेगी ।
तब राजा मुझे दण्ड देंगे, ऐसा उपाय करना चाहिए जिससे सांप भी मरे और
लाठी भी न टूटे । मैं दूध भी पी जाऊं और राजा बिगड़े भी नहीं ।

वे चतुर तो थे ही, उन्होंने एक उपाय सोचा, एक कटोरे में खूब
खौलाया हुआ दूध रखा और इस बिल्ली को वहां बुलाया । बिल्ली दौड़कर
आई । उसने दूध पीने को कटोरे को मुंह में लगाया, गोनू झा ने बिल्ली की
गर्दन पकड़ ली ।

थोड़ी देर तक उसका मुंह दूध में डुबोये रखा । बिल्ली का
गया, वह छटपटाकर भागी । दूसरे दिन भी बिल्ली दूध पीने आई
ने फिर उसका मुंह गरम दूध में डूबो दिया । इसी तरह चार-पांच
हुआ ।

अब बिल्ली को दूध पीने की आदत छुट गई । अब तो दूध
उसकी नानी मर जाती । दूध का कटोरा सामने आते ही वह भाग
उलटकर पीछे भी नहीं देखती । अब गोनू झा खूब दूध पीते, दही
बिल्ली को रोटी, भात खिलाते ।

एक साल बीत गया । राजा ने अपने दरबारियों को बुलवाया,
बिल्लियां मंगवाई गई । दरबारियों ने अपनी-अपनी बिल्ली को खू
पिलाया था, सबकी बिल्ली खूब मोटी-ताजी थी । लेकिन गोनू झ
बिल्ली दुबली-पतली थी । राजा ने गोनू झा से इसका कारण पूछ

गोनू झा बोले – महाराज ! इसमें मेरा कोई दोष नहीं, मेरा भाग्य
खोटा है । मेरी बिल्ली तो दूध पीती ही नहीं, दूध देखते ही भाग जात

राजा को बड़ा अचरज हुआ, वे बिगड़े और बोले-आप मुझे ही
है, भला बिल्ली कहीं दूध से बैर रखे ।

गोनू झा ने कहा – महाराज ! आप जांच लीजिए । यदि मेरी बि
दूध पी ले तो मुझे दण्ड दिया जाय नहीं तो मुझे ही ईनाम मिलना चा

राजा ने गोनू झा की बात मान ली, चट एक कटोरा गरम दूध ल
गया । अपनी बिल्ली को गोनू झा दूध के पास ले गए, दूध देखते ही बि
भाग खड़ी हुई । कई बार लोगों ने कोशिश की, जब भी दूध का कट
बिलली के सामने आता तभी वह भाग जाती । फिर एक थाली में
लाया गया तो बिल्ली ने भात खा लिया ।

राजा गोनू झा की चालाकी समझ गए थे । बोले – इसमें जरूर ग
झा ने कोइं चतुराई की है । मैंने समझ लिया कि उनकी बुद्धि सबसे ते
है, इसलिए पहला ईनाम उन्हीं को देता हूँ ।

ईनाम पाकर गोनू झा खुशी से घर लौटे ।

निर्मला बोली – सखी ! मैं अब पन्द्रहवी कहानी कहती हूँ ।

15. भैंस का बँटवारा

गोनू झा के भाई का नाम था भोनू झा । एक बार दोनों भाई में झगड़ा
आ, यहां तक की दोनों अलग-अलग हो गए । जितनी चीजें थी सभी
राबर-बराबर बांट ली । लेकिन भैंस के बटवारे में झंझट हो गई ।

एक ही भैस थी, दोनों भाईयों में बराबर-बराबर हिस्सा नहीं लग
कता था, इसी तरह एक कम्बल के बंटवारे में भी झंझट हो गई ।

एक ही कम्बल था, आधा-आधा बांटा न जा सकता था, अब दोनों
कम्बल और भैंस को लेकर समस्या पैदा हो गई ।

पंच बुलाये गये, भोनू झा ने पहले ही घूस देकर पंचों को अपनी ओर
ला लिया था ।

अन्त में यह फैसला हुआ कि एक भई रात को कम्बल रखें और एक
ाई दिन को ।

भैंस का बंटवारा भी विचित्र रीति से हुआ, एक भाई का हिस्सा मुंह
ी ओर से आधा धर रखा गया, दूसरे भाई का हिस्सा पूंछ की ओर से ।

संयोगवश भोनू झा के हिस्से में रात को कम्बल पड़ा तथा भैंस पूंछ
ी ओर से ।

किन्तु गोनू झा इस बंटवारे से घाटे में रहे, वे दिन भर कम्बल को
ुखाते झाड़ते और रात को भोनू झा ओढ़कर सो जाता । इसी तरह वे भैंस
ो चराते, पानी पिलाते और दूध लेता भोनू झा, अब गोनू झा बड़े फेर
ं पड़े ।

एक बार उन्होंने भोनू झा से कहा – भाई ! मैं इतनी मेहनत करता हूँ
ैंस चराता हूँ, किन्तु मुझे कभी दूध नसीब नहीं होता यहां तक की गोबर
ी तुम्हीं ले लेते हो कुछ मुझे भी दिया करो ।

भोनू झा बिगड़ कर कहा – वाह ! अब तो बंटवारा हो चुका है । अब
तो झंझट की बात ही नहीं ।

अब तो गोनू झा बड़े फेर में पड़े, अन्त में उन्होंने एक उपाय सोचा ।
उस दिन उन्होंने दिन भर भैंस को कुछ भी खाने को नहीं दिया । शाम में
जब घर चलने लगे तब कम्बल को अच्छी तरह पानी में भिंगों डाला ।

रात में जब भोनू झा कम्बल लेने गया, तब उसने कम्बल भीग... अब तो बिगड़ा । उसने गोनू झा से कहा – यह क्या शरारत हैं ? ... को क्यों भिंगो दिया ? अब मैं क्या ओढूंगा ?

गोनू झा ने हंसकर जवाब दिया – वाह ! इससे तुम्हें क्या मतल... चीज को मैं भिंगोकर ही रखूंगा । रात में तो मैंने नहीं भिंगोया ।

भोनू झा क्या बोलता, जलभुन कर वह भैंस दूहने चला गया, ... दूह ही रहा था कि एकाएक गोनू झा पहुँचे और तड़ातड़ भैंस के ... लाठी जमाने लगे । अब तो भैंस ने वह लताड़ फेंकी की भोनू झा चा... चित हो गया, सारा दूध मिट्टी में मिल गया । उसे चोट आई, व... बबूला होते हुए गोनू झा से बोला – यह कैसी बेईमानी है ? में दूध ... था और तुमने यह शरारत की, सारा दूध बराबर हो गया और चोट सो अलग ।

गोनू झा ने कहा – भाई ! मैं अपने हिस्से को कुछ भी करूंगा ... तुम्हें क्या मतलब ? तुम अपने हिस्से में दूध दुहना और मैं अपने हिस्... पीटता हूं, इसमें तो अन्य की बात नहीं ।

गोनू झा यह उत्तर सुनकर भोनू झा शर्माया । उस दिन से भैंस ... कम्बल का बंटवारा उचित रीति से होने लगा ।

–: उपसंहार :–

16. लकड़ी के बकरी

हिमालय के शिखरों पर बलखाती निर्मल जल की एक नदी बहती ... उस नदी के दोनों ओर था घना जंगल । इसी जंगल में तपस्या करता ... साधु चरणदास । भगवान की तपस्या के सिवा उसे किसी चीज से ... लगाव न था । चरणदास के एक गुरु थे, जो कभी कभी चरणदास के ... आया-जाया करते थे । एक दिन जब वे उसके पास आये, अरे..... वे ... मेरा कमण्डल उठाकर ले गए । चरणदास पकड़ो उन्हें तब चरण... बोले – आप चिन्ता न करें गुरूदेवों मैं अभी आपका कमण्डल ... लेकर आता हूं ।

चरणदास ने बन्दरों का पीछा किया और बोले–बन्दरों और शैतान ...न्दरों ? रूक जाओ, वरना मैं तुम्हें शाप दे दूंगा ।

शैतान बन्दर घने जंगल में गुम हो गया और चरणदास उदास हो उठा, ...गर मेरे पास रूपये पैसे होते तो में पास के गांवे में जाकर एक कमण्डल ...रीद लाता ।

तभी उसके मन में एक विचार आया – अरे ! अगर मैं इन पेड़ों की कुछ लकड़ियों को काटकर ले चलूं और इनसे लकड़ी के जानवर बनाऊं उन्हें बाजार में बेचकर आसानी से कुछ रूपये पैसे प्राप्त किये जा सकते हैं । चरणदास कुछ लकड़ियां लेंकर अपनी कुटिया में पहुंचा और लकड़ियों को थोड़ा काट-छाँटकर चार टाँगे, सिर और धड़ का रूप दे दिया ।

इस प्रकार चरणदास ने लकड़ी का एक घोड़ा तथा एक शेर बनाया और उन्हें लेकर हिमालय की तलहटी में बसे गांव के हाट में पहुंच गया । शीघ्र ही जब दोनों जानवर रूपी खिलौने बिक गये तो चरणदास एक कमण्डल पास के ही दुकान से खरीद कर अपनी कुटिया में पहुँच गया और गुरुजी से बोला – लीजिए गुरुदेव ! आपका कमण्डल आ गया है ।

तब गुरुदेव बोले – सदा प्रसन्न रहो शिष्य ।

कमण्डल लेकर गुरुजी खुशी-खुशी वहां से प्रस्थान कर गए ।

उस दिन से चरणदास को नया शौक लग गया । उसे जब भी समय मिलता वह जंगल में निकल जाता । ढूंढकर कुछ लकड़ियाँ काटकर ले आता, फिर उस लकड़ियों को भिन्न-भिन्न रूप देने का प्रयत्न करता । इस काम में उसे बहुत सुख मिलता, अब भजन के अलावा जो समय मिलता उसमें वह यही काम करता ।

एक बार जाड़े का समय था, गुरुजी फिर चरणदास के पास आये । तब चरणदास ने बोला – गुरुजी ! गुरुजी बोले – चिरायु हो वत्स! कैसे हो ? तब चरणदास बोले – ठीक हैं गुरुजी आइये, भीतर पधारिये । चरणदास ने उसे आदर के साथ बिठाया । कुछ दिनों से वहां जबरदस्त बर्फ पड़ रही थी, इसलिए न तो तलहट्टी पर बसे गांव से ही कुछ खाने और पीने का सामान अपने कुटिया में ला पाया था और न ही फल-फूल ।

अतः उदास स्वर में बोला – आप मेरे गुरु भी रहे और अतिथि लेकिन आपके आदर-सत्कार के लिए अब मेरे पास कुछ नहीं है । मैं नही पा रहा हूँ कि आपको जलपान कैसे कराऊं । मैंने भी तो दिन नहीं खाया है ।

ओह ! तभी गुरुजी ने आस-पास में नजर दौड़ाई । झोपड़ी में एक लकड़ी के खिलौने रखे हुए थे और गुरुजी बोले – ये क्या है ? चरणदास ने पूरी बात बता दी ।

तब गुरुजी मुस्कुराकर बोले – जरा दिखाना, तुमने क्या बनाया है ? चरणदास ने लकड़ी के बन्दर को उन्हें देते हुए कहा लीजिए गुरुदेव ! तो बन्दर है । देखिये दूसरी तरफ से यह बिल्ली भी लगती है । यह देखि मैंने बकरी बनाने की चेष्टा भी की है । तब गुरुजी बोले – इस बकरी यहाँ ले आओ । चरणदास ने बकरी लाकर पास रख दी तो गुरुजी ध्या लगाकर बैठ गए । ध्यान पूरा होने पर उन्होंने अपने कमण्डल से जल लेक लकड़ी की बकरी पर छिड़का और फिर मंत्र पढ़ते हुए उस पर हाथ फेरने लगे । या देवी सर्वभूतेषु ।

अगले ही पल बकरी जिन्दा हो गई । और मिमियाने लगी । तब आश्चर्य से चरणदास बोले – यह बकरी तो जिन्दा हो गई ।

लकड़ी की बकरी को जीवित देखते ही चरणदास गुरुजी के चरणों पर गिर पड़ा । आप धन्य हैं गुरुजी । तभी गुरुजी बोले – बकरी का दूध पीओ और मौज करो । अगले दिन सुबह होते ही गुरुजी वहाँ से चले गए, लेकिन चरणदास उस दिन से बहुत ही ज्यादा खुश रहने लगा ।

गुरुजी के प्रति उनकी श्रद्धा और भी बढ़ गई थी । वाह क्या मजा आ रहा है । रोज बढ़िया व ताजा दूध पीने को मिलता है । कुछ दिनों के बाद गुरुजी फिर आये और बोले – कहो चरणदास ! लगता है तुम बकरी पाकर बहुत खुश हो ?

चरणदास बोले – आपने ठीक कहा गुरुजी । परन्तु आपसे एक निवेदन है । मैं जंगल में अकेला रहता हूँ । मैंने एक कुत्ता बनाया है । अगर आप उसमें जान डाल दें तो बकरी की रक्षा का साधन भी हमें हो जायेगा । तब गुरुजी ने चरणदास से बोले – चरणदास ! तुम लालच कर रहे हो ।

बिना कारण जानवरों में जान डालना ठीक नहीं । लेकिन जब चरणदास ने बहुत विनती की तो उसकी खुशी के लिए गुरुजी ने उसके द्वारा बनाये गए लकड़ी के कुत्ते में भी जान डाल दी । अब तो वह कुत्ता भी जिन्दा हो गया और भौं-भौं करने लग गया । कुछ देर वहां विश्राम करने के बाद गुरुजी चले गए । तब मन-ही-मन चरणदास सोचने लगा – वाह ! कितना अच्छा होता, जो कुत्ता मनुष्य की बोली बोल पाता ।

कुछ दिनों बाद जब गुरुजी का फिर आना हुआ तो वह कुशलक्षेम पूछने के बाद क्या बात है चरणदास ! आज तुम कुछ परेशान लग रहे हो ?

तब चरणदास बोले – मेरी परेशानी तो इस कुत्ते के कारण है गुरुजी ! जो यह मनुष्य की बोली नहीं बोल पाता है । कृपा कर आप इसे मनुष्य की भाषा बोलने की शक्ति दे दीजिए । जब गुरुजी बोले – चरणदास ! मैंने तो तुझे पहले भी चेतावनी दी थी कि इस तरह का लालच रूकेगा ।

वैसे भी कुत्ते को मनुष्य की बोली देना प्रकृति नियम के विरुद्ध है, ऐसा करना गलत होगा । तब चरणदास जी बोले – बस गुरुजी ! यह मेरी अन्तिम इच्छा है । कृपया यह उपकार मुझ पर अवश्य कर दीजिए ।

अंत में गुरुजी को व्यग्र शिष्य की बात को माननी पड़ी । गुरुजी मंत्र को पढ़ना शुरू कर दिए – ओऽम विष्णु नमो नमः कुत्ते को मनुष्य की बोली देकर अगले दिन गुरुजी प्रस्थान कर गए ।

धीरे-धीरे समय काफी बीत गया । एक बार गुरुजी जब चरणदास की झोपड़ी में पधारे तो चरणदास उन्हें बाहर कहीं दिखाई नहीं दिया ।

तब गुरुजी मन-ही-मन सोचने लगे – कहीं किसी जंगली हिंसक पशु का शिकार तो नहीं हो गया चरणदास । फिर कुछ सोचकर वे उस कुटिया के अन्दर पहुँचे, परन्तु अन्दर कदम रखते ही गुरुजी सन्नाटे में आ गए ।

और आश्चर्यपूर्वक बोले – अरे चरणदास ! क्या हुआ तुम्हें ! ओह, यह तो बेहोश है और अब फौरन इसे उपचार की जरूरत है । अगले ही पल गुरुजी जंगल की ओर भागे और शीघ्र ही जंगल से कुछ जड़ी-बुटियाँ ले आये और बोले – इन बुटियों को खिलानें और घावों पर लेप करने से न केवल यह होश में आ जायेगा, बल्कि इसके जखम भी कुछ ही दिनों में भर जायेंगे । उपचार के बाद ।

हमारे यहाँ से प्रकाशित NCERT के नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित सामान्य ज्ञान, सामान्य विज्ञान, अंकगणित एवं इंगलिश स्पीकिंग की पुस्तकों का नवीनतम संग्रह –

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में निश्चित सफलता तथा अपनी ज्ञान को बढ़ाने के लिए अवश्य पढ़ें –

NCERT के नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित

ज्ञान गंगा

अंकगणित

NCERT के नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित

ज्ञान गंगा

सामान्य विज्ञान

ज्ञान गंगा

परफेक्ट इंगलिश स्पीकिंग कोर्स

NCERT के नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित

ज्ञान गंगा

जूनियर

सामान्य ज्ञान

NCERT के नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित

ज्ञान गंगा

सामान्य ज्ञान

प्रकाशक :

पारस पब्लिकेशन प्रा0 लिमिटेड

खजांची रोड, पटना-800004

फोन-0612-2303294, 2303336